वाणी तो बोले विसाल, रमती रमतियाल।
कंठ तो झाकझमाल, अंग तो अति रसाल, सोहंती रे सनंध।। १० ।।

खेल-खेल में ऊंचे स्वर से गाती हैं। गले की आवाज रसीली है। काम से भरे अंग की शोभा लुभावनी है।

गावती सुचंग रंग, आणती अति उमंग।
स्वर एक गाय संग, अलवेली अति अंग, वास्नाओ सुगंध।। ११ ।।

मधुर रंग में उमंग भरकर सब सखियां एक स्वर में मिलकर गाती हैं और सब वातावरण आनन्द से खुशबूदार हो जाता है।

वल्लभ कंठ वलाय, लिए रंग धाय धाय।
रामत करे सवाय, पाछी नव राखे काय, ऊभी रहे रे उकंध।। १२ ।।

सखियां वालाजी से कहती हैं, हे वालाजी! खड़े रहो। वह दौड़-दौड़ कर आती हैं। वालाजी के गले में हाथ डालकर उनसे भी बढ़-चढ़कर खेलती हैं। उस समय अंग को भी नहीं संभाल पातीं।

इंद्रावती अंगे आप, वालाजीसुं करे विख्यात।
मुखतो मेले संघात, अमृत पिए अघात, सुख तो लिए रे सुन्दर।। १३ ।।

श्री इन्द्रावतीजी अपने धनी से अंग मिलाकर चुम्बन द्वारा अधरों का अमृत पीकर तृप्त होती हैं। बड़े मन-मोहक और सुन्दर खेल का सुख लेती हैं।

।। प्रकरण ।। १३ ।। चौपाई ।। ४४६ ।।

राग श्री कालेरो

आवोरे सखियो आपण हमची खूंदिए, वालाजीने भेला लीजे रे।
रामत करतां गीतज गाइए, हांस विनोद रंगडा कीजे रे।। १ ।।

आओ री सखियो! वालाजी के साथ में उछलते हुए खेलें। खेलते समय हंसी और विनोद के साथ गीत गाएं।

मारा वालैया ए रामत घणूं रूडी, हमचडी रलियाली रे।
कालेरामां कंठ चढावी, गीत गाइए पडताली रे।। २ ।।

हे वालाजी! यह खेल बहुत अच्छा है। मस्ती से भरा है और सुहावना है। ऊंचे स्वर में गाएं तथा हाथ की ताली बजाएं।

हमचडीनो अवसर आव्यो, आगे कह्यूं नहीं अमे तमने रे।
एवो समयो अमने क्यांहे न लाधो, हामडी रहीती अमने रे।। ३ ।।

अब हमारी चाह को पूर्ण करने का समय आ गया है। हमने इससे पूर्व कभी आपसे नहीं कहा। ऐसा समय भी पहले कभी मिला नहीं था और इसलिए हमारी इच्छा बाकी थी।

जे रस छे वाला हमचडीमां, ते तो क्यांहे न दीठो रे।
जेम जेम सखियो आवे अधकेरी, तेम तेम दिए रस मीठो रे।। ४ ।।

इस लीला में जो रस है, वह हमने कभी नहीं देखा। इसमें जैसे-जैसे अधिक सखियां आती जाती हैं, वैसे-वैसे यह रस बढ़ता जाता है।

Njanand App

वचन सर्वे गाइए प्रेमना, तेना अर्थ अंगमा समाय।
ते ता अर्थ प्रगट पाधरा, हस्तक वाला संग थाय।।५ ।।

सखियो! आप सब मिलकर प्रेम वचन ही गाएं। जिसका भाव हृदय में आ जाए और हाथ पकड़ कर प्रियतम के साथ खेलें।

अमृत पीजे ने चुमन दीजे, कंठडे वालाने वलाइए।
हमचड़ीमां त्रण रस लीजे, रेहेस रामतडी गाइए।।६ ।।

इस खेल में तीन प्रकार के आनन्द लें। अधरों से रस पिएं। चुम्बन दें। वालाजी के गले से लिपट कर आनन्द भरे गीत गाएं।

ए रामतमा विलास जे कीधा, ते केहेवाय नहीं मुख वाणी रे।
सर्वे सुखडा लई करीने, रह्या हृदयामां जाणी रे।।७ ।।

इस खेल में जो हमने विलास के सुख लिए, वह शब्दों द्वारा वर्णन नहीं हो सकते हैं। सब प्रकार के सुख लेकर हृदय में उनका अनुभव होता है।

जेटला वचन गाया अमे रमता, ते सर्वेना सुख लीधां।
कहे इंद्रावती केम कहूं वचने, अनेक सुख वाले दीधां।।८ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि जिन वचनों को हमने गाया, उन सबका सुख रास में वालाजी ने हमको दिया, जो वर्णित नहीं हो सकता।

।। प्रकरण ।। १४ ।। चौपाई ।। ४५४ ।।

राग मारू

वाला आपण रमिए आंख मिचामणी, ए सोभा जाय न कही रे।
निकुंजना मंदिर अति सुंदर, आपण छपिए ते जुजवा थई रे।।१ ।।

हे वालाजी! आओ हम आंख मिचौनी की रामत खेलें। जिसकी शोभा कहने में नहीं आती। फूलों के कमरे अति सुन्दर हैं। इनमें अलग-अलग छिप जाएं।

एवुं सुणीने साथ सहु हरख्यो, ए छे रामतडी सारी।
पेहेलो दाव आपणमा कोण देसे, ते तमे कहोने विचारी।।२ ।।

ऐसा सुनकर सभी सुन्दरसाथ खुश हो गए। यह खेल बहुत अच्छा है। विचार करके कहें कि पहले अपने में से दांव (बारी) कौन देगा?

सहु साथ कहे वालो दाव देसे, पेहेलो ते पिउजीनो वारो।
जो पेहेलो दाव आपण दऊं, तो ए झलाए नहीं धुतारो।।३ ।।

सब साथ ने उत्तर दिया कि पहले वालाजी ही दाव देंगे। पहले उनकी ही बारी है। यदि हम पहले दांव (बारी) देंगे तो यह छलिया पकड़ा नहीं जाएगा।

आवो रे वाला हूं आंखडी मीचूं, आंखडी ते मीचजो गाढो।
अमे जईने वनमां छपिए, पछे तमे खोलीनें काढो।।४ ।।

आओ वालाजी! पहले मैं आपकी आंखें मीचूं। आप खुद अपनी आंख बन्द करते हो तो जोर से बन्द करना। हम सब वन में जाकर छिप जाते हैं। फिर आप हमको ढूंढ लेना।

Nijanand App